श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(चतुर्थ खण्ड)

[द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक और स्त्रीपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)

अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

MUNSHI RAM MANOHAR LAL
Booksellers & Publishers
NAI SARAK, DELHI

द्रोणपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(द्रोणाभिषेकपर्व)	
१	भीष्मजीके धराशायी होनेसे कौरवोंका शोक तथा उनके द्वारा कर्णका स्मरण	३१०१
२	कर्णकी रणयात्रा	३१०५
३	भीष्मजीके प्रति कर्णका कथन	३१०९
४	भीष्मजीका कर्णको प्रोत्साहन देकर युद्धके लिये भेजना तथा कर्णके आगमनसे कौरवोंका हर्षोल्लास	३१११
५	कर्णका दुर्योधनके समक्ष सेनापति-पदके लिये द्रोणाचार्यका नाम प्रस्तावित करना	३११२
६	दुर्योधनका द्रोणाचार्यसे सेनापति होनेके लिये प्रार्थना करना	३११४
७	द्रोणाचार्यका सेनापतिके पदपर अभिषेक, कौरव-पाण्डव-सेनाओंका युद्ध और द्रोणका पराक्रम	३११५
८	द्रोणाचार्यके पराक्रम और वधका संक्षिप्त समाचार	३११८
९	द्रोणाचार्यकी मृत्युका समाचार सुनकर धृतराष्ट्रका शोक करना	३१२१
१०	राजा धृतराष्ट्रका शोकसे व्याकुल होना और संजयसे युद्धविषयक प्रश्न	३१२४
११	धृतराष्ट्रका भगवान् श्रीकृष्णकी संक्षिप्त लीलाओंका वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बताना	३१२९
१२	दुर्योधनका वर माँगना और द्रोणाचार्यका युधिष्ठिरको अर्जुनकी अनुपस्थितिमें जीवित पकड़ लानेकी प्रतिज्ञा करना	३१३२
१३	अर्जुनका युधिष्ठिरको आश्वासन देना तथा युद्धमें द्रोणाचार्यका पराक्रम	३१३४
१४	द्रोणका पराक्रम, कौरव-पाण्डव वीरोंका द्वन्द्वयुद्ध, रक्तनदीका वर्णन तथा अभिमन्युकी वीरता	३१३६
१५	शल्यके साथ भीमसेनका युद्ध तथा शल्यकी पराजय	३१४२
१६	वृषसेनका पराक्रम, कौरव-पाण्डव वीरोंका तुमुलयुद्ध, द्रोणाचार्यके द्वारा पाण्डवपक्षके अनेक वीरोंका वध तथा अर्जुनकी विजय	३१४४
	(संशप्तकवधपर्व)	
१७	सुशर्मा आदि संशप्तक वीरोंकी प्रतिज्ञा तथा अर्जुनका युद्धके लिये उनके निकट जाना	३१४८
१८	संशप्तक-सेनाओंके साथ अर्जुनका युद्ध और सुधन्वाका वध	३१५१
१९	संशप्तक-गणोंके साथ अर्जुनका घोर युद्ध	३१५४
२०	द्रोणाचार्यके द्वारा गरुडव्यूहका निर्माण, युधिष्ठिरका भय, धृष्टद्युम्नका आश्वासन, धृष्टद्युम्न और दुर्मुखका युद्ध तथा संकुल-युद्धमें गजसेनाका संहार	३१५६
२१	द्रोणाचार्यके द्वारा सत्यजित्, शतानीक, दृढसेन, क्षेम, वसुदान तथा पाञ्चालराजकुमार आदिका वध और पाण्डव-सेनाकी पराजय	३१६०
२२	द्रोणके युद्धके विषयमें दुर्योधन और कर्णका संवाद	३१६४
२३	पाण्डव-सेनाके महारथियोंके रथ, घोड़े, ध्वज तथा धनुषोंका विवरण	३१६६
२४	धृतराष्ट्रका अपना खेद प्रकाशित करते हुए युद्धके समाचार पूछना	३१७२
२५	कौरव-पाण्डव-सैनिकोंके द्वन्द्व-युद्ध	३१७४
२६	भीमसेनका भगदत्तके हाथीके साथ युद्ध, हाथी और भगदत्तका भयानक पराक्रम	३१७९
२७	अर्जुनका संशप्तक-सेनाके साथ भयंकर युद्ध और उसके अधिकांश भागका वध	३१८३
२८	संशप्तकोंका संहार करके अर्जुनका कौरव-सेनापर आक्रमण तथा भगदत्त और उनके हाथीका पराक्रम	३१८५
२९	अर्जुन और भगदत्तका युद्ध, श्रीकृष्णद्वारा भगदत्तके वैष्णवास्त्रसे अर्जुनकी रक्षा तथा अर्जुनद्वारा हाथीसहित भगदत्तका वध	३१८७
३०	अर्जुनके द्वारा वृषक और अचलका वध, शकुनिकी माया और उसकी पराजय तथा कौरव-सेनाका पलायन	३१९१
३१	कौरव-पाण्डव सेनाओंका घमासान युद्ध तथा अश्वत्थामाके द्वारा राजा नीलका वध	३१९४

३२–कौरव-पाण्डव सेनाओंका घमासान युद्ध, भीमसेनका कौरव महारथियोंके साथ संग्राम, भयंकर संहार, पाण्डवोंका द्रोणाचार्यपर आक्रमण, अर्जुन और कर्णका युद्ध, कर्णके भाइयोंका वध तथा कर्ण और सात्यकिका संग्राम ३१९५

(अभिमन्युवधपर्व)

३३–दुर्योधनका उपालम्भ, द्रोणाचार्यकी प्रतिज्ञा और अभिमन्युवधके वृत्तान्तका संक्षेपसे वर्णन ३२०१
३४–संजयके द्वारा अभिमन्युकी प्रशंसा, द्रोणाचार्यद्वारा चक्रव्यूहका निर्माण ··· ३२०३
३५–युधिष्ठिर और अभिमन्युका संवाद तथा व्यूहभेदनके लिये अभिमन्युकी प्रतिज्ञा ··· ३२०४
३६–अभिमन्युका उत्साह तथा उसके द्वारा कौरवोंकी चतुरङ्गिणी सेनाका संहार ··· ३२०७
३७–अभिमन्युका पराक्रम, उसके द्वारा अश्मकपुत्रका वध, शल्यका मूर्च्छित होना और कौरव-सेनाका पलायन ··· ३२१०
३८–अभिमन्युके द्वारा शल्यके भाईका वध तथा द्रोणाचार्यकी रथसेनाका पलायन ··· ३२१३
३९–द्रोणाचार्यके द्वारा अभिमन्युके पराक्रमकी प्रशंसा तथा दुर्योधनके आदेशसे दुःशासनका अभिमन्युके साथ युद्ध आरम्भ करना ··· ३२१४
४०–अभिमन्युके द्वारा दुःशासन और कर्णकी पराजय ··· ··· ३२१६
४१–अभिमन्युके द्वारा कर्णके भाईका वध तथा कौरवसेनाका संहार और पलायन ··· ३२१९
४२–अभिमन्युके पीछे जानेवाले पाण्डवोंको जयद्रथका वरके प्रभावसे रोक देना ··· ३२२०
४३–पाण्डवोंके साथ जयद्रथका युद्ध और व्यूहद्वारको रोक रखना ··· ··· ३२२२
४४–अभिमन्युका पराक्रम और उसके द्वारा वसातीय आदि अनेक योद्धाओंका वध ··· ३२२४
४५–अभिमन्युके द्वारा सत्यश्रवा, क्षत्रियसमूह, रुक्मरथ तथा उसके मित्रगणों और सैकड़ों राजकुमारोंका वध और दुर्योधनकी पराजय ··· ३२२५
४६–अभिमन्युके द्वारा लक्ष्मण तथा क्राथपुत्रका वध और सेनासहित छः महारथियोंका पलायन ३२२७
४७–अभिमन्युका पराक्रम, छः महारथियोंके साथ घोर युद्ध और उसके द्वारा वृन्दारक तथा दस हजार अन्य राजाओंके सहित कोसलनरेश बृहद्बलका वध ··· ३२२९
४८–अभिमन्युद्वारा अश्वकेतु, भोज और कर्णके मन्त्री आदिका वध एवं छः महारथियोंके साथ घोर युद्ध और उन महारथियोंद्वारा अभिमन्युके धनुष, रथ, ढाल और तलवारका नाश ··· ··· ३२३१
४९–अभिमन्युका कालिकेय, वसाति और कैकय रथियोंको मार डालना एवं छः महारथियोंके सहयोगसे अभिमन्युका वध और भागती हुई अपनी सेनाको युधिष्ठिरका आश्वासन देना ··· ··· ··· ३२३४
५०–तीसरे (तेरहवें) दिनके युद्धकी समाप्तिपर सेनाका शिबिरको प्रस्थान एवं रणभूमिका वर्णन ··· ··· ३२३७
५१–युधिष्ठिरका विलाप ··· ··· ३२३८
५२–विलाप करते हुए युधिष्ठिरके पास व्यासजीका आगमन और अकम्पन-नारद-संवादकी प्रस्तावना करते हुए मृत्युकी उत्पत्तिका प्रसंग आरम्भ करना ··· ··· ३२४०
५३–शंकर और ब्रह्माका संवाद, मृत्युकी उत्पत्ति तथा उसे समस्त प्रजाके संहारका कार्य सौंपा जाना ··· ··· ३२४१
५४–मृत्युकी घोर तपस्या, ब्रह्माजीके द्वारा उसे वरकी प्राप्ति तथा नारद-अकम्पन-संवादका उपसंहार ··· ··· ३२४५
५५–षोडशराजकीयोपाख्यानका आरम्भ, नारदजीकी कृपासे राजा सृञ्जयको पुत्रकी प्राप्ति, दस्युओंद्वारा उसका वध तथा पुत्रशोकसंतप्त सृञ्जयको नारदजीका मरुत्तका चरित्र सुनाना ··· ३२४९
५६–राजा सुहोत्रकी दानशीलता ··· ३२५३
५७–राजा पौरवके अद्भुत दानका वृत्तान्त ··· ३२५४
५८–राजा शिबिके यज्ञ और दानकी महत्ता ··· ३२५५
५९–भगवान् श्रीरामका चरित्र ··· ३२५६
६०–राजा भगीरथका चरित्र ··· ३२५९
६१–राजा दिलीपका उत्कर्ष ··· ३२६०
६२–राजा मान्धाताकी महत्ता ··· ३२६१
६३–राजा ययातिका उपाख्यान ··· ३२६३
६४–राजा अम्बरीषका चरित्र ··· ३२६४
६५–राजा शशबिन्दुका चरित्र ··· ३२६५
६६–राजा गयका चरित्र ··· ··· ३२६६
६७–राजा रन्तिदेवकी महत्ता ··· ··· ३२६८
६८–राजा भरतका चरित्र ··· ··· ३२६९
६९–राजा पृथुका चरित्र ··· ··· ३२७१
७०–परशुरामजीका चरित्र ··· ··· ३२७१

७१–नारदजीका सृञ्जयके पुत्रको जीवित करना और व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाकर अन्तर्धान होना ३२७५

(प्रतिज्ञापर्व)

७२–अभिमन्युकी मृत्युके कारण अर्जुनका विषाद और क्रोध ३२७७
७३–युधिष्ठिरके मुखसे अभिमन्युवधका वृत्तान्त सुनकर अर्जुनकी जयद्रथको मारनेके लिये शपथपूर्ण प्रतिज्ञा ३२८३
७४–जयद्रथका भय तथा दुर्योधन और द्रोणाचार्यका उसे आश्वासन देना ... ३२८७
७५–श्रीकृष्णका अर्जुनको कौरवोंके जयद्रथकी रक्षाविषयक उद्योगका समाचार बताना ... ३२८९
७६–अर्जुनके वीरोचित वचन ... ३२९१
७७–नाना प्रकारके अशुभसूचक उत्पात, कौरव-सेनामें भय और श्रीकृष्णका अपनी बहिन सुभद्राको आश्वासन देना ... ३२९३
७८–सुभद्राका विलाप और श्रीकृष्णका सबको आश्वासन ३२९५
७९–श्रीकृष्णका अर्जुनकी विजयके लिये रात्रिमें भगवान् शिवका पूजन करवाना, जागते हुए पाण्डव सैनिकोंकी अर्जुनके लिये शुभाशंसा तथा अर्जुनकी सफलताके लिये श्रीकृष्णके दारुकके प्रति उत्साहभरे वचन ३२९८
८०–अर्जुनका स्वप्नमें भगवान् श्रीकृष्णके साथ शिवजीके समीप जाना और उनकी स्तुति करना ३३०१
८१–अर्जुनको स्वप्नमें ही पुनः पाशुपतास्त्रकी प्राप्ति ३३०५
८२–युधिष्ठिरका प्रातःकाल उठकर स्नान और नित्यकर्म आदिसे निवृत्त हो ब्राह्मणोंको दान देना, वस्त्राभूषणोंसे विभूषित हो सिंहासनपर बैठना और वहाँ पधारे हुए भगवान् श्रीकृष्णका पूजन करना ३३०७
८३–अर्जुनकी प्रतिज्ञाको सफल बनानेके लिये युधिष्ठिरकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना और श्रीकृष्णका उन्हें आश्वासन देना ... ३३०९
८४–युधिष्ठिरका अर्जुनको आशीर्वाद, अर्जुनका स्वप्न सुनकर समस्त सुहृदोंकी प्रसन्नता, सात्यकि और श्रीकृष्णके साथ रथपर बैठकर अर्जुनकी रण-यात्रा तथा अर्जुनके कहनेसे सात्यकिका युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये जाना ... ३३११

(जयद्रथवधपर्व)

८५–धृतराष्ट्रका विलाप ३३१४
८६–संजयका धृतराष्ट्रको उपालम्भ ... ३३१७
८७–कौरव-सैनिकोंका उत्साह तथा आचार्य द्रोणके द्वारा चक्रशकटव्यूहका निर्माण ... ३३१९
८८–कौरव-सेनाके लिये अपशकुन, दुर्मर्षणका अर्जुनसे लड़नेका उत्साह तथा अर्जुनका रणभूमिमें प्रवेश एवं शङ्खनाद ... ३३२१
८९–अर्जुनके द्वारा दुर्मर्षणकी गजसेनाका संहार और समस्त सैनिकोंका पलायन ... ३३२३
९०–अर्जुनके बाणोंसे हताहत होकर सेनासहित दुःशासनका पलायन ३३२५
९१–अर्जुन और द्रोणाचार्यका वार्तालाप तथा युद्ध एवं द्रोणाचार्यको छोड़कर आगे बढ़े हुए अर्जुनका कौरवसैनिकोंद्वारा प्रतिरोध ... ३३२७
९२–अर्जुनका द्रोणाचार्य और कृतवर्माके साथ युद्ध करते हुए कौरव-सेनामें प्रवेश तथा श्रुतायुधका अपनी गदासे और सुदक्षिणका अर्जुनद्वारा वध ३३३०
९३–अर्जुनद्वारा श्रुतायु, अच्युतायु, नियतायु, दीर्घायु, म्लेच्छ सैनिक और अम्बष्ठ आदिका वध ३३३५
९४–दुर्योधनका उपालम्भ सुनकर द्रोणाचार्यका उसके शरीरमें दिव्य कवच बाँधकर उसीको अर्जुनके साथ युद्धके लिये भेजना ... ३३३९
९५–द्रोण और धृष्टद्युम्नका भीषण संग्राम तथा उभय पक्षके प्रमुख वीरोंका परस्पर संकुल युद्ध ... ३३४४
९६–दोनों पक्षोंके प्रधान वीरोंका द्वन्द्व-युद्ध ... ३३४७
९७–द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नका युद्ध तथा सात्यकिद्वारा धृष्टद्युम्नकी रक्षा ३३४९
९८–द्रोणाचार्य और सात्यकिका अद्भुत युद्ध ... ३३५२
९९–अर्जुनके द्वारा तीव्रगतिसे कौरवसेनामें प्रवेश, विन्द और अनुविन्दका वध तथा अद्भुत जलाशयका निर्माण ३३५५
१००–श्रीकृष्णके द्वारा अश्वपरिचर्या तथा खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट हुए अश्वोंद्वारा अर्जुनका पुनः शत्रु-सेनापर आक्रमण करते हुए जयद्रथकी ओर बढ़ना ३३६०
१०१–श्रीकृष्ण और अर्जुनको आगे बढ़ा देख कौरव-सैनिकोंकी निराशा तथा दुर्योधनका युद्धके लिये आना ३३६३

१०२–श्रीकृष्णका अर्जुनकी प्रशंसापूर्वक उसे प्रोत्साहन देना, अर्जुन और दुर्योधनका एक दूसरेके सम्मुख आना, कौरव-सैनिकोंका भय तथा दुर्योधनका अर्जुनको ललकारना ··· ३३६५
१०३–दुर्योधन और अर्जुनका युद्ध तथा दुर्योधनकी पराजय ··· ··· ३३६८
१०४–अर्जुनका कौरव महारथियोंके साथ घोर युद्ध ३३७१
१०५–अर्जुन तथा कौरव महारथियोंके ध्वजोंका वर्णन और नौ महारथियोंके साथ अकेले अर्जुनका युद्ध ··· ··· ३३७२
१०६–द्रोण और उनकी सेनाके साथ पाण्डवसेनाका द्वन्द्व-युद्ध तथा द्रोणाचार्यके साथ युद्ध करते समय रथ-भंग हो जानेपर युधिष्ठिरका पलायन ३३७६
१०७–कौरव-सेनाके क्षेमधूर्ति, वीरधन्वा, निरमित्र तथा व्याघ्रदत्तका वध और दुर्मुख एवं विकर्णकी पराजय ··· ··· ३३७९
१०८–द्रौपदी-पुत्रोंके द्वारा सोमदत्तकुमार शलका वध तथा भीमसेनके द्वारा अलम्बुषकी पराजय ३३८१
१०९–घटोत्कचद्वारा अलम्बुषका वध और पाण्डव-सेनामें हर्ष-ध्वनि ··· ··· ३३८४
११०–द्रोणाचार्य और सात्यकिका युद्ध तथा युधिष्ठिरका सात्यकिकी प्रशंसा करते हुए उसे अर्जुनकी सहायताके लिये कौरव-सेनामें प्रवेश करनेका आदेश ३३८७
१११–सात्यकि और युधिष्ठिरका संवाद ··· ३३९३
११२–सात्यकिकी अर्जुनके पास जानेकी तैयारी और सम्मानपूर्वक विदा होकर उनका प्रस्थान तथा साथ आते हुए भीमको युधिष्ठिरकी रक्षाके लिये लौटा देना ··· ··· ३३९६
११३–सात्यकिका द्रोण और कृतवर्माके साथ युद्ध करते हुए काम्बोजोंकी सेनाके पास पहुँचना ३४०१
११४–धृतराष्ट्रका विषादयुक्त वचन, संजयका धृतराष्ट्रको ही दोषी बताना, कृतवर्माका भीमसेन और शिखण्डीके साथ युद्ध तथा पाण्डव-सेनाकी पराजय ··· ··· ३४०६
११५–सात्यकिके द्वारा कृतवर्माकी पराजय, त्रिगर्तोंकी गजसेनाका संहार और जलसंधका वध ३४१३
११६–सात्यकिका पराक्रम तथा दुर्योधन और कृतवर्माकी पुनः पराजय ··· ३४१७
११७–सात्यकि और द्रोणाचार्यका युद्ध, द्रोणकी पराजय तथा कौरव-सेनाका पलायन ·· ३४१९
११८–सात्यकिद्वारा सुदर्शनका वध ··· ३४२२
११९–सात्यकि और उनके सारथिका संवाद तथा सात्यकिद्वारा काम्बोजों और यवन आदिकी सेनाकी पराजय ··· ३४२४
१२०–सात्यकिद्वारा दुर्योधनकी सेनाका संहार तथा भाइयोंसहित दुर्योधनका पलायन ··· ३४२७
१२१–सात्यकिके द्वारा पाषाणयोधी म्लेच्छोंकी सेनाका संहार और दुःशासनका सेनासहित पलायन ··· ··· ३४३०
१२२–द्रोणाचार्यका दुःशासनको फटकारना और द्रोणाचार्यके द्वारा वीरकेतु आदि पाञ्चालोंका वध एवं उनका धृष्टद्युम्नके साथ घोर युद्ध, द्रोणाचार्यका मूर्च्छित होना, धृष्टद्युम्नका पलायन, आचार्यकी विजय ··· ३४३४
१२३–सात्यकिका घोर युद्ध और दुःशासनकी पराजय ··· ··· ३४३९
१२४–कौरव-पाण्डव-सेनाका घोर युद्ध तथा पाण्डवोंके साथ दुर्योधनका संग्राम ··· ३४४१
१२५–द्रोणाचार्यके द्वारा बृहत्क्षत्र, धृष्टकेतु, जरासंधपुत्र सहदेव तथा धृष्टद्युम्नकुमार क्षत्रधर्माका वध और चेकितानकी पराजय ३४४४
१२६–युधिष्ठिरका चिन्तित होकर भीमसेनको अर्जुन और सात्यकिका पता लगानेके लिये भेजना ३४४९
१२७–भीमसेनका कौरवसेनामें प्रवेश, द्रोणाचार्यके सारथिसहित रथका चूर्ण कर देना तथा उनके द्वारा धृतराष्ट्रके ग्यारह पुत्रोंका वध, अवशिष्ट पुत्रोंसहित सेनाका पलायन ··· ३४५२
१२८–भीमसेनका द्रोणाचार्य और अन्य कौरव-योद्धाओंको पराजित करते हुए द्रोणाचार्यके रथको आठ बार फेंक देना तथा श्रीकृष्ण और अर्जुनके समीप पहुँचकर गर्जना करना तथा युधिष्ठिरका प्रसन्न होकर अनेक प्रकारकी बातें सोचना ··· ··· ३४५७
१२९–भीमसेन और कर्णका युद्ध तथा कर्णकी पराजय ३४६१
१३०–दुर्योधनका द्रोणाचार्यको उपालम्भ देना, द्रोणाचार्यका उसे द्यूतका परिणाम दिखाकर युद्धके लिये वापस भेजना और उसके साथ युधामन्यु तथा उत्तमौजाका युद्ध ··· ३४६३
१३१–भीमसेनके द्वारा कर्णकी पराजय ··· ३४६६
१३२–भीमसेन और कर्णका घोर युद्ध ··· ३४७०
१३३–भीमसेन और कर्णका युद्ध, कर्णके सारथिसहित रथका विनाश तथा धृतराष्ट्रपुत्र दुर्जयका वध ··· ··· ३४७२

१३४–भीमसेन और कर्णका युद्ध, धृतराष्ट्रपुत्र दुर्मुखका वध तथा कर्णका पलायन ... ३४७५
१३५–धृतराष्ट्रका खेदपूर्वक भीमसेनके बलका वर्णन और अपने पुत्रोंकी निन्दा करना तथा भीमके द्वारा दुर्मर्षण आदि धृतराष्ट्रके पाँच पुत्रोंका वध ३४७८
१३६–भीमसेन और कर्णका युद्ध, कर्णका पलायन, धृतराष्ट्रके सात पुत्रोंका वध तथा भीमका पराक्रम ३४८०
१३७–भीमसेन और कर्णका युद्ध तथा दुर्योधनके सात भाइयोंका वध ३४८३
१३८–भीमसेन और कर्णका भयंकर युद्ध ... ३४८६
१३९–भीमसेन और कर्णका भयंकर युद्ध, पहले भीमकी और पीछे कर्णकी विजय, उसके बाद अर्जुनके बाणोंसे व्यथित होकर कर्ण और अश्वत्थामाका पलायन ... ३४८८
१४०–सात्यकिद्वारा राजा अलम्बुषका और दुःशासनके घोड़ोंका वध ... ३४९६
१४१–सात्यकिका अद्भुत पराक्रम, श्रीकृष्णका अर्जुनको सात्यकिके आगमनकी सूचना देना और अर्जुनकी चिन्ता ... ३४९८
१४२–भूरिश्रवा और सात्यकिका रोषपूर्वक सम्भाषण और युद्ध तथा सात्यकिका सिर काटनेके लिये उद्यत हुए भूरिश्रवाकी भुजाका अर्जुनद्वारा उच्छेद ... ३५०१
१४३–भूरिश्रवाका अर्जुनको उपालम्भ देना, अर्जुनका उत्तर और आमरण अनशनके लिये बैठे हुए भूरिश्रवाका सात्यकिके द्वारा वध ... ३५०६
१४४–सात्यकिके भूरिश्रवाद्वारा अपमानित होनेका कारण तथा वृष्णिवंशी वीरोंकी प्रशंसा ... ३५११
१४५–अर्जुनका जयद्रथपर आक्रमण, कर्ण और दुर्योधनकी बातचीत, कर्णके साथ अर्जुनका युद्ध और कर्णकी पराजय तथा सब योद्धाओंके साथ अर्जुनका घोर युद्ध ... ३५१३
१४६–अर्जुनका अद्भुत पराक्रम और सिन्धुराज जयद्रथका वध ३५२०
१४७–अर्जुनके बाणोंसे कृपाचार्यका मूर्च्छित होना, अर्जुनका खेद तथा कर्ण और सात्यकिका युद्ध एवं कर्णकी पराजय ... ३५२९
१४८–अर्जुनका कर्णको फटकारना और वृषसेनके वधकी प्रतिज्ञा करना, श्रीकृष्णका अर्जुनको बधाई देकर उन्हें रणभूमिका भयानक दृश्य दिखाते हुए युधिष्ठिरके पास ले आना ... ३५३४
१४९–श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे विजयका समाचार सुनाना और युधिष्ठिरद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति तथा अर्जुन, भीम एवं सात्यकिका अभिनन्दन ३५३९
१५०–व्याकुल हुए दुर्योधनका खेद प्रकट करते हुए द्रोणाचार्यको उपालम्भ देना ... ३५४२
१५१–द्रोणाचार्यका दुर्योधनको उत्तर और युद्धके लिये प्रस्थान ३५४५
१५२–दुर्योधन और कर्णकी बातचीत तथा पुनः युद्धका आरम्भ ३५४८

(घटोत्कचवधपर्व)

१५३–कौरव-पाण्डव-सेनाका युद्ध, दुर्योधन और युधिष्ठिरका संग्राम तथा दुर्योधनकी पराजय ३५५०
१५४–रात्रियुद्धमें पाण्डव-सैनिकोंका द्रोणाचार्यपर आक्रमण और द्रोणाचार्यद्वारा उनका संहार ३५५४
१५५–द्रोणाचार्यद्वारा शिबिका वध तथा भीमसेनद्वारा घूँसे और थप्पड़से कलिङ्गराजकुमारका एवं ध्रुव, जयरात तथा धृतराष्ट्रपुत्र दुष्कर्ण और दुर्मदका वध ... ३५५६
१५६–सोमदत्त और सात्यकिका युद्ध, सोमदत्तकी पराजय, घटोत्कच और अश्वत्थामाका युद्ध और अश्वत्थामाद्वारा घटोत्कचके पुत्रका, एक अक्षौहिणी राक्षस-सेनाका तथा द्रुपदपुत्रोंका वध एवं पाण्डव-सेनाकी पराजय ... ३५५९
१५७–सोमदत्तकी मूर्छा, भीमके द्वारा बाह्लीकका वध, धृतराष्ट्रके दस पुत्रों और शकुनिके सात रथियों एवं पाँच भाइयोंका संहार तथा द्रोणाचार्य और युधिष्ठिरके युद्धमें युधिष्ठिरकी विजय ३५७१
१५८–दुर्योधन और कर्णकी बातचीत, कृपाचार्यद्वारा कर्णको फटकारना तथा कर्णद्वारा कृपाचार्यका अपमान ... ३५७४
१५९–अश्वत्थामाका कर्णको मारनेके लिये उद्यत होना, दुर्योधनका उसे मनाना, पाण्डवों और पाञ्चालोंका कर्णपर आक्रमण, कर्णका पराक्रम, अर्जुनके द्वारा कर्णकी पराजय तथा दुर्योधनका अश्वत्थामासे पाञ्चालोंके वधके लिये अनुरोध ३५७९
१६०–अश्वत्थामाका दुर्योधनको उपालम्भपूर्ण आश्वासन देकर पाञ्चालोंके साथ युद्ध करते हुए धृष्टद्युम्नके रथसहित सारथिको नष्ट करके उसकी सेनाको भगाकर अद्भुत पराक्रम दिखाना ३५८५
१६१–भीमसेन और अर्जुनका आक्रमण और कौरव-सेनाका पलायन ... ३५८८

१६२—सात्यकिद्वारा सोमदत्तका वध, द्रोणाचार्य और युधिष्ठिरका युद्ध तथा भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको द्रोणाचार्यसे दूर रहनेका आदेश ३५९०
१६३—कौरवों और पाण्डवोंकी सेनाओंमें प्रदीपों (मशालों) का प्रकाश ··· ३५९२
१६४—दोनों सेनाओंका घमासान युद्ध और दुर्योधनका द्रोणाचार्यकी रक्षाके लिये सैनिकोंको आदेश ३५९७
१६५—दोनों सेनाओंका युद्ध और कृतवर्माद्वारा युधिष्ठिरकी पराजय ··· ··· ३५९९
१६६—सात्यकिके द्वारा भूरिका वध, घटोत्कच और अश्वत्थामाका घोर युद्ध तथा भीमके साथ दुर्योधनका युद्ध एवं दुर्योधनका पलायन ३६०२
१६७—कर्णके द्वारा सहदेवकी पराजय, शल्यके द्वारा विराटके भाई शतानीकका वध और विराटकी पराजय तथा अर्जुनसे पराजित होकर अलम्बुषका पलायन ··· ··· ३६०६
१६८—शतानीकके द्वारा चित्रसेनकी और वृषसेनके द्वारा द्रुपदकी पराजय तथा प्रतिविन्ध्य एवं दुःशासनका युद्ध ··· ··· ३६०९
१६९—नकुलके द्वारा शकुनिकी पराजय तथा शिखण्डी और कृपाचार्यका घोर युद्ध ··· ३६१२
१७०—धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्यका युद्ध, धृष्टद्युम्नद्वारा द्रुमसेनका वध, सात्यकि और कर्णका युद्ध, कर्णकी दुर्योधनको सलाह तथा शकुनिका पाण्डवसेनापर आक्रमण ··· ३६१६
१७१—सात्यकिसे दुर्योधनकी, अर्जुनसे शकुनि और उलूककी तथा धृष्टद्युम्नसे कौरवसेनाकी पराजय ३६२०
१७२—दुर्योधनके उपालम्भसे द्रोणाचार्य और कर्णका घोर युद्ध, पाण्डवसेनाका पलायन, भीमसेनका सेनाको लौटाकर लाना और अर्जुनसहित भीमसेनका कौरवोंपर आक्रमण करना ··· ३६२३
१७३—कर्णद्वारा धृष्टद्युम्न एवं पाञ्चालोंकी पराजय, युधिष्ठिरकी घबराहट तथा श्रीकृष्ण और अर्जुनका घटोत्कचको प्रोत्साहन देकर कर्णके साथ युद्धके लिये भेजना ··· ३६२६
१७४—घटोत्कच और जटासुरके पुत्र अलम्बुषका घोर युद्ध तथा अलम्बुषका वध ··· ३६३०
१७५—घटोत्कच और उसके रथ आदिके स्वरूपका वर्णन तथा कर्ण और घटोत्कचका घोर संग्राम ३६३३
१७६—अलायुधका युद्धस्थलमें प्रवेश तथा उसके स्वरूप और रथ आदिका वर्णन ··· ३६४१
१७७—भीमसेन और अलायुधका घोर युद्ध ··· ३६४३
१७८—दोनों सेनाओंमें परस्पर घोर युद्ध और घटोत्कचके द्वारा अलायुधका वध एवं दुर्योधनका पश्चात्ताप ··· ··· ३६४६
१७९—घटोत्कचका घोर युद्ध तथा कर्णके द्वारा चलायी हुई इन्द्रप्रदत्त शक्तिसे उसका वध ३६४८
१८०—घटोत्कचके वधसे पाण्डवोंका शोक तथा श्रीकृष्णकी प्रसन्नता और उसका कारण ३६५५
१८१—भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनको जरासंध आदि धर्मद्रोहियोंके वध करनेका कारण बताना ३६५७
१८२—कर्णने अर्जुनपर शक्ति क्यों नहीं छोड़ी, इसके उत्तरमें संजयका धृतराष्ट्रसे और श्रीकृष्णका सात्यकिसे रहस्ययुक्त कथन ··· ३६५९
१८३—धृतराष्ट्रका पश्चात्ताप, संजयका उत्तर एवं राजा युधिष्ठिरका शोक और भगवान् श्रीकृष्ण तथा महर्षि व्यासद्वारा उसका निवारण ··· ··· ३६६३

(द्रोणवधपर्व)

१८४—निद्रासे व्याकुल हुए उभयपक्षके सैनिकोंका अर्जुनके कहनेसे सो जाना और चन्द्रोदयके बाद पुनः उठकर युद्धमें लग जाना ··· ३६६७
१८५—दुर्योधनका उपालम्भ और द्रोणाचार्यका व्यंगपूर्ण उत्तर ··· ··· ३६७१
१८६—पाण्डव-वीरोंका द्रोणाचार्यपर आक्रमण, द्रुपदके पौत्रों तथा द्रुपद एवं विराट् आदिका वध, धृष्टद्युम्नकी प्रतिज्ञा और दोनों दलोंमें घमासान युद्ध ··· ··· ३६७४
१८७—युद्धस्थलकी भीषण अवस्थाका वर्णन और नकुलके द्वारा दुर्योधनकी पराजय ··· ३६७८
१८८—दुःशासन और सहदेवका, कर्ण और भीमसेनका तथा द्रोणाचार्य और अर्जुनका घोर युद्ध ··· ··· ३६८१
१८९—धृष्टद्युम्नका दुःशासनको हराकर द्रोणाचार्यपर आक्रमण, नकुल-सहदेवद्वारा उनकी रक्षा, दुर्योधन तथा सात्यकिका संवाद तथा युद्ध, कर्ण और भीमसेनका संग्राम और अर्जुनका कौरवोंपर आक्रमण ··· ··· ३६८५
१९०—द्रोणाचार्यका घोर कर्म, ऋषियोंका द्रोणको अस्त्र त्यागनेका आदेश तथा अश्वत्थामाकी मृत्यु सुनकर द्रोणका जीवनसे निराश होना ३६८९
१९१—द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नका युद्ध तथा सात्यकिकी शूरवीरता और प्रशंसा ··· ३६९३

१९२–उभयपक्षके श्रेष्ठ महारथियोंका परस्पर युद्ध, धृष्टद्युम्नका आक्रमण, द्रोणाचार्यका अस्त्र त्यागकर योग-धारणाके द्वारा ब्रह्मलोक-गमन और धृष्टद्युम्नद्वारा उनके मस्तकका उच्छेद ३६९७

(नारायणास्त्र-मोक्षपर्व)

१९३–कौरव-सैनिकों तथा सेनापतियोंका भागना, अश्वत्थामाके पूछनेपर कृपाचार्यका उसे द्रोण-वधका वृत्तान्त सुनाना ··· ३७०३
१९४–धृतराष्ट्रका प्रश्न ··· ··· ३७०७
१९५–अश्वत्थामाके क्रोधपूर्ण उद्गार और उसके द्वारा नारायणास्त्रका प्राकट्य ··· ३७०८
१९६–कौरवसेनाका सिंहनाद सुनकर युधिष्ठिरका अर्जुनसे कारण पूछना और अर्जुनके द्वारा अश्वत्थामाके क्रोध एवं गुरुहत्याके भीषण परिणामका वर्णन ··· ··· ३७१२
१९७–भीमसेनके वीरोचित उद्गार और धृष्टद्युम्नके द्वारा अपने कृत्यका समर्थन ··· ३७१५
१९८–सात्यकि और धृष्टद्युम्नका परस्पर क्रोधपूर्वक वाग्बाणोंसे लड़ना तथा भीमसेन, सहदेव और श्रीकृष्ण एवं युधिष्ठिरके प्रयत्नसे उनका निवारण ··· ··· ३७१८
१९९–अश्वत्थामाके द्वारा नारायणास्त्रका प्रयोग, राजा युधिष्ठिरका खेद, भगवान् श्रीकृष्णके बताये हुए उपायसे सैनिकोंकी रक्षा, भीमसेनका वीरोचित उद्गार और उनपर उस अस्त्रका प्रबल आक्रमण ··· ३७२२
२००–श्रीकृष्णका भीमसेनको रथसे उतारकर नारायणास्त्रको शान्त करना, अश्वत्थामाका उसके पुनःप्रयोगमें अपनी असमर्थता बताना तथा अश्वत्थामाद्वारा धृष्टद्युम्नकी पराजय, सात्यकिका दुर्योधन, कृपाचार्य, कृतवर्मा, कर्ण और वृषसेन—इन छः महारथियोंको भगा देना। फिर अश्वत्थामाद्वारा मालव, पौरव और चेदिदेशके युवराजका वध एवं भीम और अश्वत्थामाका घोर युद्ध तथा पाण्डवसेनाका पलायन ··· ··· ३७२७
२०१–अश्वत्थामाके द्वारा आग्नेयास्त्रके प्रयोगसे एक अक्षौहिणी पाण्डवसेनाका संहार, श्रीकृष्ण और अर्जुनपर उस अस्त्रका प्रभाव न होनेसे चिन्तित हुए अश्वत्थामाको व्यासजीका शिव और श्रीकृष्णकी महिमा बताना ··· ३७३६
२०२–व्यासजीका अर्जुनसे भगवान् शिवकी महिमा बताना तथा द्रोणपर्वके पाठ और श्रवणका फल ··· ··· ३७४४

चित्र-सूची

(तिरंगा)

१–सेनापति द्रोणाचार्य ··· ··· ३१०१
२–श्रीकृष्णद्वारा अर्जुनके अश्वोंकी परिचर्या ··· ··· ३२१३
३–श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको आश्वासन ··· ३२११
४–अर्जुनका जयद्रथके मस्तकको काटकर समन्त-पञ्चक क्षेत्रसे बाहर फेंकना ··· ३४१३
५–जयद्रथवधके पश्चात् श्रीकृष्ण और अर्जुनका युधिष्ठिरसे मिलना ··· ३५२९
६–व्यासजी अर्जुनको शङ्करजीकी महिमा कह रहे हैं ··· ३६१३

(सादा)

७–दुर्योधनद्वारा द्रोणाचार्यका सेनापतिके पदपर अभिषेक ··· ३११५
८–अर्जुनके द्वारा भगदत्तका वध ··· ३१९०
९–चक्रव्यूह ··· ··· ३२०४
१०–अभिमन्युके द्वारा कौरव-सेनाके प्रमुख वीरोंका संहार ··· ··· ३२०८
११–अभिमन्युपर अनेक महारथियोंद्वारा एक साथ प्रहार ··· ··· ३२३३
१२–रुद्रदेवका ब्रह्माजीसे उनके क्रोधकी शान्तिके लिये वर माँगना ··· ३२४२

१३–अर्जुनका जयद्रथवधके लिये प्रतिज्ञा करना ३२८४
१४–अर्जुनका स्वप्नदर्शन ३३०२
१५–श्रीकृष्ण और अर्जुनका दुर्मर्षणकी गजसेनामें प्रवेश ३३२३
१६–घटोत्कचद्वारा अलम्बुषका वध ... ३३८६
१७–सात्यकिका कौरव-सेनामें प्रवेश और युद्ध ३४२४
१८–भीमसेनके द्वारा द्रोणाचार्यके रथको दूर फेंकनेका उपक्रम ३४५८
१९–भीमसेनके द्वारा कर्णकी पराजय ... ३४७०
२०–भीमसेनका कर्णके रथपर हाथीकी लाश फेंकना ३४९३
२१–जयद्रथके कटे हुए मस्तकका उसके पिताकी गोदमें गिरना ३५२८
२२–घटोत्कचका रथ ३५६२
२३–घटोत्कचको कर्णके साथ युद्ध करनेकी प्रेरणा ३६२९
२४–घटोत्कचने गिरते समय कौरवोंकी एक अक्षौहिणी सेना पीस डाली ... ३६५४
२५–द्रोणाचार्यका ध्यानावस्थामें देह-त्याग एवं तेजस्वी-स्वरूपसे ऊर्ध्वलोक-गमन ... ३७००
२६–अश्वत्थामाके द्वारा पाण्डव-सेनापर नारायणास्त्रका प्रयोग ३७२४
२७–अश्वत्थामाके द्वारा अर्जुनपर आग्नेयास्त्रका प्रयोग एवं उसके द्वारा पाण्डव-सेनाका संहार ... ३७३७
२८–वेदव्यासजीका अश्वत्थामाको आश्वासन ... ३७४०
२९–(७५ लाइन चित्र फरमोंमें)

श्रीहरिः

कर्णपर्व

अध्याय विषय	पृष्ठ-संख्या
१–कर्णवधका संक्षिप्त वृत्तान्त सुनकर जनमेजयका वैशम्पायनजीसे उसे विस्तारपूर्वक कहनेका अनुरोध	३७५७
२–धृतराष्ट्र और संजयका संवाद ...	३७५८
३–दुर्योधनके द्वारा सेनाको आश्वासन देना तथा सेनापति कर्णके युद्ध और वधका संक्षिप्त वृत्तान्त	३७६०
४–धृतराष्ट्रका शोक और समस्त स्त्रियोंकी व्याकुलता	३७६२
५–संजयका धृतराष्ट्रको कौरवपक्षके मारे गये प्रमुख वीरोंका परिचय देना ...	३७६३
६–कौरवोंद्वारा मारे गये प्रधान-प्रधान पाण्डव पक्षके वीरोंका परिचय ...	३७६६
७–कौरव-पक्षके जीवित योद्धाओंका वर्णन और धृतराष्ट्रकी मूर्च्छा	३७६९
८–धृतराष्ट्रका विलाप	३७७१
९–धृतराष्ट्रका संजयसे विलाप करते हुए कर्णवधका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त पूछना ...	३७७३
१०–कर्णको सेनापति बनानेके लिये अश्वत्थामाका प्रस्ताव और सेनापतिके पदपर उसका अभिषेक	३७७९
११–कर्णके सेनापतित्वमें कौरव-सेनाका युद्धके लिये प्रस्थान और मकरव्यूहका निर्माण तथा पाण्डव-सेनाके अर्धचन्द्राकार व्यूहकी रचना और युद्धका आरम्भ	३७८२
१२–दोनों सेनाओंका घोर युद्ध और भीमसेनके द्वारा क्षेमधूर्तिका वध	३७८५
१३–दोनों सेनाओंका परस्पर घोर युद्ध तथा सात्यकि-के द्वारा विन्द और अनुविन्दका वध ...	३७८९
१४–द्रौपदीपुत्र श्रुतकर्मा और प्रतिविन्ध्यद्वारा क्रमशः चित्रसेन एवं चित्रका वध, कौरवसेनाका पलायन तथा अश्वत्थामाका भीमसेनपर आक्रमण	३७९१
१५–अश्वत्थामा और भीमसेनका अद्भुत युद्ध तथा दोनोंका मूर्च्छित हो जाना ...	३७९४
१६–अर्जुनका संशप्तकों तथा अश्वत्थामाके साथ अद्भुत युद्ध	३७९६
१७–अर्जुनके द्वारा अश्वत्थामाकी पराजय ...	३८००
१८–अर्जुनके द्वारा हाथियोंसहित दण्डधार और दण्ड आदिका वध तथा उनकी सेनाका पलायन	३८०३
१९–अर्जुनके द्वारा संशप्तक सेनाका संहार, श्रीकृष्णका अर्जुनको युद्धस्थलका दृश्य दिखाते हुए उनके पराक्रमकी प्रशंसा करना तथा पाण्ड्यनरेशका कौरवसेनाके साथ युद्धारम्भ ...	३८०५
२०–अश्वत्थामाके द्वारा पाण्ड्यनरेशका वध ...	३८०९
२१–कौरव-पाण्डव-दलोंका भयंकर घमासान युद्ध ...	३८१३
२२–पाण्डवसेनापर भयानक गज-सेनाका आक्रमण, पाण्डवोंद्वारा पुण्ड्रकी पराजय तथा वङ्गराज और अङ्गराजका वध, गज-सेनाका विनाश और पलायन	३८१५
२३–सहदेवके द्वारा दुःशासनकी पराजय ...	३८१७
२४–नकुल और कर्णका घोर युद्ध तथा कर्णके द्वारा नकुलकी पराजय और पाञ्चाल-सेनाका संहार	३८१९
२५–युयुत्सु और उलूकका युद्ध, युयुत्सुका पलायन, शतानीक और धृतराष्ट्रपुत्र श्रुतकर्माका तथा सुतसोम और शकुनिका घोर युद्ध एवं शकुनि-द्वारा पाण्डवसेनाका विनाश ...	३८२३
२६–कृपाचार्यसे धृष्टद्युम्नका भय तथा कृतवर्माके द्वारा शिखण्डीकी पराजय ...	३८२६
२७–अर्जुनद्वारा राजा श्रुतंजय, सौश्रुति, चन्द्रदेव और सत्यसेन आदि महारथियोंका वध एवं संशप्तक-सेनाका संहार	३८२९
२८–युधिष्ठिर और दुर्योधनका युद्ध, दुर्योधनकी पराजय तथा उभय पक्षकी सेनाओंका अमर्यादित भयंकर संग्राम	३८३१
२९–युधिष्ठिरके द्वारा दुर्योधनकी पराजय ...	३८३४
३०–सात्यकि और कर्णका युद्ध तथा अर्जुनके द्वारा कौरव-सेनाका संहार और पाण्डवोंकी विजय ...	३८३६
३१–रात्रिमें कौरवोंकी मन्त्रणा, धृतराष्ट्रके द्वारा दैवकी प्रबलताका प्रतिपादन, संजयद्वारा धृतराष्ट्रपर दोषारोप तथा कर्ण और दुर्योधन-की बातचीत	३८४०
३२–दुर्योधनकी शल्यसे कर्णका सारथि बननेके लिये प्रार्थना और शल्यका इस विषयमें घोर विरोध करना, पुनः श्रीकृष्णके समान अपनी प्रशंसा सुनकर उसे स्वीकार कर लेना ...	३८४४

३३–दुर्योधनका शल्यसे त्रिपुरोंकी उत्पत्तिका वर्णन, त्रिपुरोंसे भयभीत इन्द्र आदि देवताओंका ब्रह्माजीके साथ भगवान् शङ्करके पास जाकर उनकी स्तुति करना ३८४९
३४–दुर्योधनका शल्यको शिवके विचित्र रथका विवरण सुनाना और शिवजीद्वारा त्रिपुर-वधका उपाख्यान सुनाना एवं परशुरामजीके द्वारा कर्णको दिव्य अस्त्र मिलनेकी बात कहना ... ३८५३
३५–शल्य और दुर्योधनका वार्तालाप, कर्णका सारथि होनेके लिये शल्यकी स्वीकृति ३८६३
३६–कर्णका युद्धके लिये प्रस्थान और शल्यसे उसकी बातचीत ३८६६
३७–कौरवसेनामें अपशकुन, कर्णकी आत्मप्रशंसा, शल्यके द्वारा उसका उपहास और अर्जुनके बल-पराक्रमका वर्णन ३८६९
३८–कर्णके द्वारा श्रीकृष्ण और अर्जुनका पता बतानेवालेको नाना प्रकारकी भोगसामग्री और इच्छानुसार धन देनेकी घोषणा ... ३८७३
३९–शल्यका कर्णके प्रति अत्यन्त आक्षेपपूर्ण वचन कहना ३८७५
४०–कर्णका शल्यको फटकारते हुए मद्रदेशके निवासियोंकी निन्दा करना एवं उसे मार डालनेकी धमकी देना ३८७७
४१–राजा शल्यका कर्णको एक हंस और कौएका उपाख्यान सुनाकर उसे श्रीकृष्ण और अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए उनकी शरणमें जानेकी सलाह देना ३८८१
४२–कर्णका श्रीकृष्ण और अर्जुनके प्रभावको स्वीकार करते हुए अभिमानपूर्वक शल्यको फटकारना और उनसे अपनेको परशुरामजीद्वारा और ब्राह्मणद्वारा प्राप्त हुए शापोंकी कथा सुनाना ३८८७
४३–कर्णका आत्मप्रशंसापूर्वक शल्यको फटकारना ... ३८९२
४४–कर्णके द्वारा मद्र आदि वाहीक देशवासियोंकी निन्दा ३८९२
४५–कर्णका मद्र आदि वाहीकनिवासियोंके दोष बताना, शल्यका उत्तर देना और दुर्योधनका दोनोंको शान्त करना ३८९५
४६–कौरव-सेनाकी व्यूहरचना, युधिष्ठिरके आदेशसे अर्जुनका आक्रमण, शल्यके द्वारा पाण्डव-सेनाके प्रमुख वीरोंका वर्णन तथा अर्जुनकी प्रशंसा ... ३८९९
४७–कौरवों और पाण्डवोंकी सेनाओंका भयंकर युद्ध तथा अर्जुन और कर्णका पराक्रम ... ३९०५
४८–कर्णके द्वारा नकुलसे योद्धाओंसहित पाण्डव-सेनाका संहार, भीमसेनके द्वारा कर्णपुत्र भानुसेनका वध, नकुल और सात्यकिके साथ वृषसेनका युद्ध तथा कर्णका राजा युधिष्ठिरपर आक्रमण ... ३९०७
४९–कर्ण और युधिष्ठिरका संग्राम, कर्णकी मूर्च्छा, कर्णद्वारा युधिष्ठिरकी पराजय और तिरस्कार तथा पाण्डवोंके हजारों योद्धाओंका वध और रक्त-नदीका वर्णन तथा पाण्डव-महारथियोंद्वारा कौरव-सेनाका विध्वंस और उसका पलायन ... ३९११
५०–कर्ण और भीमसेनका युद्ध तथा कर्णका पलायन ३९१८
५१–भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके छः पुत्रोंका वध, भीम और कर्णका युद्ध, भीमके द्वारा गजसेना, रथसेना और घुड़सवारोंका संहार तथा उभयपक्षकी सेनाओंका घोर युद्ध ... ३९२२
५२–दोनों सेनाओंका घोर युद्ध और कौरव-सेनाका व्यथित होना ... ३९२७
५३–अर्जुनद्वारा दस हजार संशप्तक योद्धाओं और उनकी सेनाका संहार ... ३९२९
५४–कृपाचार्यके द्वारा शिखण्डीकी पराजय और सुकेतुका वध तथा धृष्टद्युम्नके द्वारा कृतवर्माका परास्त होना ३९३२
५५–अश्वत्थामाका घोर युद्ध, सात्यकिके सारथिका वध एवं युधिष्ठिरका अश्वत्थामाको छोड़कर दूसरी ओर चले जाना ३९३५
५६–नकुल-सहदेवके साथ दुर्योधनका युद्ध, धृष्टद्युम्नसे दुर्योधनकी पराजय, कर्णद्वारा पाञ्चाल-सेनासहित योद्धाओंका संहार, भीमसेनद्वारा कौरव-योद्धाओंका सेनासहित विनाश, अर्जुनद्वारा संशप्तकोंका वध तथा अश्वत्थामाका अर्जुनके साथ घोर युद्ध करके पराजित होना ... ३९३७
५७–दुर्योधनका सैनिकोंको प्रोत्साहन देना और अश्वत्थामाकी प्रतिज्ञा ३९४६
५८–अर्जुनका श्रीकृष्णसे युधिष्ठिरके पास चलनेका आग्रह तथा श्रीकृष्णका उन्हें युद्ध-भूमि दिखाते और वहाँका समाचार बताते हुए रथको आगे बढ़ाना ३९४७
५९–धृष्टद्युम्न और कर्णका युद्ध, अश्वत्थामाका धृष्टद्युम्नपर आक्रमण तथा अर्जुनके द्वारा धृष्टद्युम्नकी रक्षा और अश्वत्थामाकी पराजय ... ३९५०
६०–श्रीकृष्णका अर्जुनसे दुर्योधन और कर्णके पराक्रमका वर्णन करके कर्णको मारनेके लिये अर्जुनको उत्साहित करना तथा भीमसेनके दुष्कर पराक्रमका वर्णन करना ... ३९५४

६१–कर्णद्वारा शिखण्डीकी पराजय, धृष्टद्युम्न और दुःशासनका तथा वृषसेन और नकुलका युद्ध, सहदेवद्वारा उलूककी तथा सात्यकिद्वारा शकुनिकी पराजय, कृपाचार्यद्वारा युधामन्युकी एवं कृतवर्माद्वारा उत्तमौजाकी पराजय तथा भीमसेनद्वारा दुर्योधनकी पराजय, गजसेनाका संहार और पलायन ··· ··· ३९६०
६२–युधिष्ठिरपर कौरव-सैनिकोंका आक्रमण ··· ३९६५
६३–कर्णद्वारा नकुल-सहदेवसहित युधिष्ठिरकी पराजय एवं पीड़ित होकर युधिष्ठिरका अपनी छावनीमें जाकर विश्राम करना ··· ··· ३९६७
६४–अर्जुनद्वारा अश्वत्थामाकी पराजय, कौरवसेनामें भगदड़ एवं दुर्योधनसे प्रेरित कर्णद्वारा भार्गवास्त्रसे पाञ्चालोंका संहार ··· ३९६९
६५–भीमसेनको युद्धका भार सौंपकर श्रीकृष्ण और अर्जुनका युधिष्ठिरके पास जाना ··· ३९७४
६६–युधिष्ठिरका अर्जुनसे भ्रमवश कर्णके मारे जानेका वृत्तान्त पूछना ··· ··· ३९७६
६७–अर्जुनका युधिष्ठिरसे अबतक कर्णको न मार सकनेका कारण बताते हुए उसे मारनेके लिये प्रतिज्ञा करना ··· ·· ३९७९
६८–युधिष्ठिरका अर्जुनके प्रति अपमानजनक क्रोधपूर्ण वचन ··· ·· ३९८१
६९–युधिष्ठिरका वध करनेके लिये उद्यत हुए अर्जुनको भगवान् श्रीकृष्णका बलाक व्याध और कौशिक मुनिकी कथा सुनाते हुए धर्मका तत्त्व बताकर समझाना ··· ··· ३९८५
७०–भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनको प्रतिज्ञा भङ्ग, भ्रातृवध तथा आत्मघातसे बचाना और युधिष्ठिरको सान्त्वना देकर संतुष्ट करना ··· ३९९१
७१–अर्जुनसे भगवान् श्रीकृष्णका उपदेश, अर्जुन और युधिष्ठिरका प्रसन्नतापूर्वक मिलन एवं अर्जुनद्वारा कर्णवधकी प्रतिज्ञा, युधिष्ठिरका आशीर्वाद ··· ३९९७
७२–श्रीकृष्ण और अर्जुनकी रणयात्रा, मार्गमें शुभ शकुन तथा श्रीकृष्णका अर्जुनको प्रोत्साहन देना ३९९९
७३–भीष्म और द्रोणके पराक्रमका वर्णन करते हुए अर्जुनके बलकी प्रशंसा करके श्रीकृष्णका कर्ण और दुर्योधनके अन्यायकी याद दिलाकर अर्जुनको कर्णवधके लिये उत्तेजित करना ··· ४००२
७४–अर्जुनके वीरोचित उद्गार ··· ४००९
७५–दोनों पक्षोंकी सेनाओंमें द्वन्द्वयुद्ध तथा सुषेणका वध ··· ··· ४०१३
७६–भीमसेनका अपने सारथि विशोकसे संवाद ४०१४
७७–अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरव-सेनाका संहार तथा भीमसेनसे शकुनिकी पराजय एवं दुर्योधनादि धृतराष्ट्र-पुत्रोंका सेनासहित भागकर कर्णका आश्रय लेना ··· ४०१८
७८–कर्णके द्वारा पाण्डव-सेनाका संहार और पलायन ·· · ४०२३
७९–अर्जुनका कौरव-सेनाको विनाश करके खूनकी नदी बहा देना और अपना रथ कर्णके पास ले चलनेके लिये भगवान् श्रीकृष्णसे कहना तथा श्रीकृष्ण और अर्जुनको आते देख शल्य और कर्णकी बातचीत तथा अर्जुनद्वारा कौरव सेनाका विध्वंस ··· ··· ४०२७
८०–अर्जुनका कौरव-सेनाको नष्ट करके आगे बढ़ना ४०३४
८१–अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरववीरोंका संहार तथा कर्णका पराक्रम ··· ४०३६
८२–सात्यकिके द्वारा कर्णपुत्र प्रसेनका वध, कर्णका पराक्रम और दुःशासन एवं भीमसेनका युद्ध ४०४०
८३–भीमद्वारा दुःशासनका रक्तपान और उसका वध, युधामन्युद्वारा चित्रसेनका वध तथा भीमका हर्षोद्गार ··· ··· ४०४४
८४–धृतराष्ट्रके दस पुत्रोंका वध, कर्णका भय और शल्यका समझाना तथा नकुल और वृषसेनका युद्ध ··· ··· ··· ४०४९
८५–कौरववीरोंद्वारा कुलिन्दराजके पुत्रों और हाथियोंका संहार तथा अर्जुनद्वारा वृषसेनका वध ··· ·· ४०५२
८६–कर्णके साथ युद्ध करनेके विषयमें श्रीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत तथा अर्जुनका कर्णके सामने उपस्थित होना ··· ··· ४०५६
८७–कर्ण और अर्जुनका द्वैरथ-युद्धमें समागम, उनकी जय-पराजयके सम्बन्धमें सब प्राणियोंका संशय, ब्रह्मा और महादेवजीद्वारा अर्जुनकी विजय-घोषणा तथा कर्णकी शल्यसे और अर्जुनकी श्रीकृष्णसे वार्ता ··· ४०५८
८८–अर्जुनद्वारा कौरव-सेनाका संहार, अश्वत्थामाका दुर्योधनसे संधिके लिये प्रस्ताव और दुर्योधनद्वारा उसकी अस्वीकृति ·· ४०६५
८९–कर्ण और अर्जुनका भयंकर युद्ध और कौरववीरोंका पलायन ··· ··· ४०६९

९०—अर्जुन और कर्णका घोर युद्ध, भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनकी सर्पमुख बाणसे रक्षा तथा कर्णका अपना पहिया पृथ्वीमें फँस जानेपर अर्जुनसे बाण न चलानेके लिये अनुरोध करना ··· ··· ४०७९

९१ भगवान् श्रीकृष्णका कर्णको चेतावनी देना और कर्णका वध ··· ··· ४०८९

९२ कौरवोंका शोक, भीम आदि पाण्डवोंका हर्ष, कौरव-सेनाका पलायन और दुःखित शल्यका दुर्योधनको सान्त्वना देना ··· ४०९४

९३ भीमसेनद्वारा पचीस हजार पैदल सैनिकोंका वध, अर्जुनद्वारा रथसेनाका विध्वंस, कौरवसेनाका पलायन और दुर्योधनका उसे रोकनेके लिये विफल प्रयास · ४०९६

९४ -शल्यके द्वारा रणभूमिका दिग्दर्शन, कौरव-सेनाका पलायन और श्रीकृष्ण तथा अर्जुनका शिविरकी ओर गमन ··· ·· ४१००

९५—कौरव-सेनाका शिबिरकी ओर पलायन और शिविरोंमें प्रवेश ··· ·· ४१०५

९६ युधिष्ठिरका रणभूमिमें कर्णको मारा गया देखकर प्रसन्न हो श्रीकृष्ण और अर्जुनकी प्रशंसा करना, धृतराष्ट्रका शोकमग्न होना तथा कर्णपर्वके श्रवणकी महिमा ·· ४१०६

चित्र-सूची

(तिरंगा)

१—कर्ण और अर्जुनका युद्ध ··· · ३७५७

२ त्रिपुर-विनाशके लिये देवताओं-द्वारा शङ्करजीकी स्तुति ··· ··· ३८११

३—श्रीकृष्ण आगे जाते हुए युधिष्ठिरको देखनेके लिये अर्जुनसे कह रहे हैं ··· ··· ३९५०

४ भगवान्के द्वारा अर्जुनकी सर्पमुख बाणसे रक्षा ··· ··· ४०११

(सादा)

५ अर्जुनके द्वारा मित्रसेनका शिरश्छेद ··· ·· ३८३०

६—दुर्योधनकी शल्यसे कर्णका सारथि बननेके लिये प्रार्थना ·· ३८४५

७ शल्य कर्णको हंस और कौएका उपाख्यान सुनाकर अपमानित कर रहे हैं ··· ··· ३८८५

८—भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके कई पुत्रों एवं कौरवयोद्धाओंका संहार ··· ··· ३९२२

९ अर्जुनके द्वारा संशप्तकोंका संहार ··· ३९४२

१०—धर्मराजके चरणोंमें श्रीकृष्ण एवं अर्जुन प्रणाम कर रहे हैं ··· ३९७५

११—कर्णद्वारा पृथ्वीमें धँसे हुए पहियेको उठानेका प्रयत्न ··· ··· ४०८८

१२—कर्णवध ··· ··· ४०९२

१३—(१६ लाइन चित्र फरमोंमें)

॥ श्रीहरिः ॥

शल्यपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१	संजयके मुखसे शल्य और दुर्योधनके वधका वृत्तान्त सुनकर राजा धृतराष्ट्रका मूर्च्छित होना और सचेत होनेपर उन्हें विदुरका आश्वासन देना	४१११
२	राजा धृतराष्ट्रका विलाप करना और संजयसे युद्धका वृत्तान्त पूछना	४११४
३	कर्णके मारे जानेपर पाण्डवोंके भयसे कौरव-सेनाका पलायन, सामना करनेवाले पचीस हजार पैदलोंका भीमसेनद्वारा वध तथा दुर्योधनका अपने सैनिकोंको समझा-बुझाकर पुनः पाण्डवोंके साथ युद्धमें लगाना	४११८
४	कृपाचार्यका दुर्योधनको संधिके लिये समझाना	४१२२
५	दुर्योधनका कृपाचार्यको उत्तर देते हुए संधि स्वीकार न करके युद्धका ही निश्चय करना ...	४१२५
६	दुर्योधनके पूछनेपर अश्वत्थामाका शल्यको सेनापति बनानेके लिये प्रस्ताव, दुर्योधनका शल्यसे अनुरोध और शल्यद्वारा उसकी स्वीकृति	४१२८
७	राजा शल्यके वीरोचित उद्गार तथा श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको शल्यवधके लिये उत्साहित करना	४१३०
८	उभय-पक्षकी सेनाओंका समराङ्गणमें उपस्थित होना एवं बची हुई दोनों सेनाओंकी संख्याका वर्णन	४१३२
९	उभय-पक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध और कौरव-सेनाका पलायन	४१३५
१०	नकुलद्वारा कर्णके तीन पुत्रोंका वध तथा उभय पक्षकी सेनाओंका भयानक युद्ध ...	४१३८
११	शल्यका पराक्रम, कौरव-पाण्डव योद्धाओंके द्वन्द्वयुद्ध तथा भीमसेनके द्वारा शल्यकी पराजय	४१४२
१२	भीमसेन और शल्यका भयानक गदायुद्ध तथा युधिष्ठिरके साथ शल्यका युद्ध, दुर्योधनद्वारा चेकितानका और युधिष्ठिरद्वारा चन्द्रसेन एवं द्रुमसेनका वध, पुनः युधिष्ठिर और माद्री-पुत्रोंके साथ शल्यका युद्ध ...	४१४५
१३	मद्रराज शल्यका अद्भुत पराक्रम ...	४१४९
१४	अर्जुन और अश्वत्थामाका युद्ध तथा पाञ्चाल वीर सुरथका वध	४१५१
१५	दुर्योधन और धृष्टद्युम्नका एवं अर्जुन और अश्वत्थामाका तथा शल्यके साथ नकुल और सात्यकि आदिका घोर संग्राम ...	४१५४
१६	पाण्डव-सैनिकों और कौरव-सैनिकोंका द्वन्द्व युद्ध, भीमसेनद्वारा दुर्योधनकी तथा युधिष्ठिर-द्वारा शल्यकी पराजय	४१५६
१७	भीमसेनद्वारा राजा शल्यके घोड़े और सारथिका तथा युधिष्ठिरद्वारा राजा शल्य और उनके भाईका वध एवं कृतवर्माकी पराजय ...	४१६०
१८	मद्रराजके अनुचरोंका वध और कौरव-सेनाका पलायन	४१६७
१९	पाण्डव-सैनिकोंका आपसमें बातचीत करते हुए पाण्डवोंकी प्रशंसा और धृतराष्ट्रकी निन्दा करना तथा कौरव-सेनाका पलायन, भीमद्वारा इक्कीस हजार पैदलोंका संहार और दुर्योधनका अपनी सेनाको उत्साहित करना ...	४१६९
२०	धृष्टद्युम्नद्वारा राजा शाल्वके हाथीका और सात्यकिद्वारा राजा शाल्वका वध ...	४१७३
२१	सात्यकिद्वारा क्षेमधूर्तिका वध, कृतवर्माका युद्ध और उसकी पराजय एवं कौरव-सेनाका पलायन	४१७६
२२	दुर्योधनका पराक्रम और उभयपक्षकी सेनाओं-का घोर संग्राम	४१७८
२३	कौरव-पक्षके सात सौ रथियोंका वध, उभय-पक्षकी सेनाओंका मर्यादाशून्य घोर संग्राम तथा शकुनिका कूट युद्ध और उसकी पराजय ...	४१८०
२४	श्रीकृष्णके सम्मुख अर्जुनद्वारा दुर्योधनके दुराग्रहकी निन्दा और रथियोंकी सेनाका संहार	४१८५
२५	अर्जुन और भीमसेनद्वारा कौरवोंकी रथसेना एवं गजसेनाका संहार, अश्वत्थामा आदिके द्वारा दुर्योधनकी खोज, कौरव-सेनाका पलायन तथा सात्यकिद्वारा संजयका पकड़ा जाना	४१८९

२६–भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके ग्यारह पुत्रोंका और बहुत-सी चतुरङ्गिणी सेनाका वध ... ४१९३
२७–श्रीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत, अर्जुनद्वारा सत्यकर्मा, सत्येषु तथा पैंतालीस पुत्रों और सेनासहित सुशर्माका वध तथा भीमके द्वारा धृतराष्ट्रपुत्र सुदर्शनका अन्त ... ४१९५
२८–सहदेवके द्वारा उलूक और शकुनिका वध एवं बची हुई सेनासहित दुर्योधनका पलायन ४१९८

(ह्रदप्रवेशपर्व)

२९–बची हुई समस्त कौरव-सेनाका वध, संजयका कैदसे छूटना, दुर्योधनका सरोवरमें प्रवेश तथा युयुत्सुका राजमहिलाओंके साथ हस्तिनापुरमें जाना ... ४२०२

(गदापर्व)

३०–अश्वत्थामा, कृतवर्मा और कृपाचार्यका सरोवर-पर आकर दुर्योधनसे युद्ध करनेके विषयमें बातचीत करना, व्याधोंसे दुर्योधनका पता पाकर युधिष्ठिरका सेनासहित सरोवरपर जाना और कृपाचार्य आदिका दूर हट जाना ... ४२०८
३१–पाण्डवोंका द्वैपायनसरोवरपर जाना, वहाँ युधिष्ठिर और श्रीकृष्णकी बातचीत तथा तालाबमें छिपे हुए दुर्योधनके साथ युधिष्ठिरका संवाद ... ४२१२
३२–युधिष्ठिरके कहनेसे दुर्योधनका तालाबसे बाहर होकर किसी एक पाण्डवके साथ गदायुद्धके लिये तैयार होना ... ४२१६
३३–श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको फटकारना, भीमसेनकी प्रशंसा तथा भीम और दुर्योधनमें वाग्युद्ध ... ४२२१
३४–बलरामजीका आगमन और स्वागत तथा भीमसेन और दुर्योधनके युद्धका आरम्भ ... ४२२४
३५–बलदेवजीकी तीर्थयात्रा तथा प्रभासक्षेत्रके प्रभावका वर्णनके प्रसङ्गमें चन्द्रमाके शाप-मोचनकी कथा ... ४२२६
३६–उदपानतीर्थकी उत्पत्तिकी तथा त्रित मुनिके कूपमें गिरने, वहाँ यज्ञ करने और अपने भाइयोंको शाप देनेकी कथा ४२३०
३७–विनशन, सुभूमिक, गन्धर्व, गर्गस्रोत, शङ्ख, द्वैतवन तथा नैमिषेय आदि तीर्थोंमें होते हुए बलभद्रजीका सप्त सारस्वततीर्थमें प्रवेश ... ४२३३
३८–सप्तसारस्वततीर्थकी उत्पत्ति, महिमा और मङ्कणक मुनिका चरित्र ... ४२३७
३९–औशनस एवं कपालमोचनतीर्थकी माहात्म्यकथा तथा रुषङ्गुके आश्रम पृथूदक तीर्थकी महिमा ४२४०
४०–आर्ष्टिषेण एवं विश्वामित्रकी तपस्या तथा वरप्राप्ति ... ४२४२
४१–अवाकीर्ण और यायात तीर्थकी महिमाके प्रसंगमें दाल्भ्यकी कथा और ययातिके यज्ञका वर्णन ४२४४
४२–वसिष्ठापवाह तीर्थकी उत्पत्तिके प्रसंगमें विश्वामित्रका क्रोध और वसिष्ठजीकी सहनशीलता ... ४२४७
४३–ऋषियोंके प्रयत्नसे सरस्वतीके शापकी निवृत्ति, जलकी शुद्धि तथा अरुणासङ्गममें स्नान करनेसे राक्षसों और इन्द्रका संकटमोचन ... ४२४९
४४–कुमार कार्तिकेयका प्राकट्य और उनके अभिषेककी तैयारी ... ४२५२
४५–स्कन्दका अभिषेक और उनके महापार्षदोंके नाम, रूप आदिका वर्णन ... ४२५५
४६–मातृकाओंका परिचय तथा स्कन्ददेवकी रणयात्रा और उनके द्वारा तारकासुर, महिषासुर आदि दैत्योंका सेनासहित संहार ... ४२६०
४७–वरुणका अभिषेक तथा अग्नितीर्थ, ब्रह्मयोनि और कुबेरतीर्थकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग ... ४२६६
४८–बदरपाचनतीर्थकी महिमाके प्रसङ्गमें श्रुतावती और अरुन्धतीके तपकी कथा ... ४२६८
४९–इन्द्रतीर्थ, रामतीर्थ, यमुनातीर्थ और आदित्य-तीर्थकी महिमा ... ४२७१
५०–आदित्यतीर्थकी महिमाके प्रसङ्गमें असित देवल तथा जैगीषव्य मुनिका चरित्र ... ४२७३
५१–सारस्वततीर्थकी महिमाके प्रसङ्गमें दधीच ऋषि और सारस्वत मुनिके चरित्रका वर्णन ... ४२७६
५२–वृद्धकन्याका चरित्र, शृङ्गवान्‌के साथ उसका विवाह और स्वर्गगमन तथा उस तीर्थका माहात्म्य ४२७९
५३–ऋषियोंद्वारा कुरुक्षेत्रकी सीमा और महिमाका वर्णन ४२८१

५४–प्लक्षप्रस्रवण आदि तीर्थों तथा सरस्वतीकी महिमा एवं नारदजीसे कौरवोंके विनाश और भीम तथा दुर्योधनके युद्धका समाचार सुनकर बलरामजीका उसे देखनेके लिये जाना ... ४२८३
५५–बलरामजीकी सलाहसे सबका कुरुक्षेत्रके समन्तपञ्चकतीर्थमें जाना और वहाँ भीम तथा दुर्योधनमें गदायुद्धकी तैयारी ... ४२८५
५६–दुर्योधनके लिये अपशकुन, भीमसेनका उत्साह तथा भीम और दुर्योधनमें वाग्युद्धके पश्चात् गदायुद्धका आरम्भ ४२८८
५७–भीमसेन और दुर्योधनका गदायुद्ध ... ४२९१
५८–श्रीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत तथा अर्जुनके संकेतके अनुसार भीमसेनका गदासे दुर्योधनकी जाँघें तोड़कर उसे धराशायी करना एवं भीषण उत्पातोंका प्रकट होना ४२९५
५९–भीमसेनके द्वारा दुर्योधनका तिरस्कार, युधिष्ठिरका भीमसेनको समझाकर अन्यायसे रोकना और दुर्योधनको सान्त्वना देते हुए खेद प्रकट करना ४२९९
६०–क्रोधमें भरे हुए बलरामको श्रीकृष्णका समझाना और युधिष्ठिरके साथ श्रीकृष्णकी तथा भीमसेनकी बातचीत ... ४३०१
६१–पाण्डव-सैनिकोंद्वारा भीमकी स्तुति, श्रीकृष्णका दुर्योधनपर आक्षेप, दुर्योधनका उत्तर तथा श्रीकृष्णके द्वारा पाण्डवोंका समाधान एवं शङ्खध्वनि ४३०४
६२–पाण्डवोंका कौरवशिविरमें पहुँचना, अर्जुनके रथका दग्ध होना और पाण्डवोंका भगवान् श्रीकृष्णको हस्तिनापुर भेजना ... ४३०९
६३–युधिष्ठिरकी प्रेरणासे श्रीकृष्णका हस्तिनापुरमें जाकर धृतराष्ट्र और गान्धारीको आश्वासन दे पुनः पाण्डवोंके पास लौट आना ... ४३१२
६४–दुर्योधनका संजयके सम्मुख विलाप और वाहकोंद्वारा अपने साथियोंको संदेश भेजना ... ४३१७
६५–दुर्योधनकी दशा देखकर अश्वत्थामाका विषाद, प्रतिज्ञा और सेनापतिके पदपर अभिषेक ... ४३२०

चित्र-सूची

(तिरंगा)

१–युधिष्ठिरकी ललकारपर दुर्योधनका पानीसे बाहर निकल आना ४१११
२–मित्रावरुणके आश्रममें बलरामजीकी देवर्षि नारदजीसे भेंट ४२२१

(सादा)

३–शल्यका कौरवोंके सेनापति-पदपर अभिषेक ४१३०
४–युधिष्ठिरद्वारा शल्यपर शक्तिका घातक प्रहार ४१६४
५–श्रीकृष्ण दुर्योधनकी ओर संकेत करते हुए उसे मारनेके लिये अर्जुनको प्रेरित कर रहे हैं ४१९५
६–विश्रामके लिये सरोवरमें छिपे हुए दुर्योधन ... ४२७५
७–पाण्डवोंद्वारा बलरामजीकी पूजा ... ४२९४
८–दुर्योधन और भीमका गदायुद्ध ... ४२९१
९–युद्धके अन्तमें अर्जुनके रथका दाह ... ४३१०

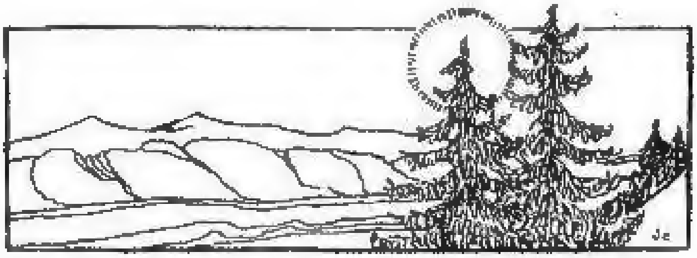

सौप्तिकपर्व

अध्याय विषय	पृष्ठ-संख्या
१–तीनों महारथियोंका एक वनमें विश्राम, कौओंपर उल्लूका आक्रमण देख अश्वत्थामाके मनमें क्रूर संकल्पका उदय तथा अपने दोनों साथियोंसे उसका सलाह पूछना ··· ···	४३२३
२–कृपाचार्यका अश्वत्थामाको दैवकी प्रबलता बताते हुए कर्तव्यके विषयमें सत्पुरुषोंसे सलाह लेनेकी प्रेरणा देना ··· ···	४३२७
३–अश्वत्थामाका कृपाचार्य और कृतवर्माको उत्तर देते हुए उन्हें अपना क्रूरतापूर्ण निश्चय बताना	४३२९
४–कृपाचार्यका कल प्रातःकाल युद्ध करनेकी सलाह देना और अश्वत्थामाका इसी रात्रिमें सोते हुओंको मारनेका आग्रह प्रकट करना ···	४३३१
५–अश्वत्थामा और कृपाचार्यका संवाद तथा तीनोंका पाण्डवोंके शिबिरकी ओर प्रस्थान ···	४३३४
६–अश्वत्थामाका शिबिरद्वारपर एक अद्भुत पुरुषको देखकर उसपर अस्त्रोंका प्रहार करना और अस्त्रोंके अभावमें चिन्तित हो भगवान् शिवकी शरणमें जाना ··· ···	४३३६
७–अश्वत्थामाद्वारा शिवकी स्तुति, उसके सामने एक अग्निवेदी तथा भूतगणोंका प्राकट्य और उसका आत्मसमर्पण करके भगवान् शिवसे खड्ग प्राप्त करना ··· ···	४३३८
८–अश्वत्थामाके द्वारा रात्रिमें सोये हुए पाञ्चाल आदि समस्त वीरोंका संहार तथा फाटकसे निकलकर भागते हुए योद्धाओंका कृतवर्मा और कृपाचार्यद्वारा वध ··· ···	४३४२
९–दुर्योधनकी दशा देखकर कृपाचार्य और अश्वत्थामाका विलाप तथा उनके मुखसे पाञ्चालोंके वधका वृत्तान्त जानकर दुर्योधनका प्रसन्न होकर प्राणत्याग करना ···	४३५१
(ऐषीकपर्व)	
१०–धृष्टद्युम्नके सारथिके मुखसे पुत्रों और पाञ्चालोंके वधका वृत्तान्त सुनकर युधिष्ठिरका विलाप, द्रौपदीको बुलानेके लिये नकुलको भेजना, सुहृदोंके साथ शिबिरमें जाना तथा मारे हुए पुत्रादिको देखकर भाईसहित शोकातुर होना	४३५५
११–युधिष्ठिरका शोकमें व्याकुल होना, द्रौपदीका विलाप तथा द्रोणकुमारके वधके लिये आग्रह, भीमसेनका अश्वत्थामाको मारनेके लिये प्रस्थान	४३५८
१२–श्रीकृष्णका अश्वत्थामाकी चपलता एवं क्रूरताके प्रसंगमें सुदर्शनचक्र माँगनेकी बात सुनाते हुए उससे भीमसेनकी रक्षाके लिये प्रयत्न करनेका आदेश देना ··· ···	४३६०
१३–श्रीकृष्ण, अर्जुन और युधिष्ठिरका भीमसेनके पीछे जाना, भीमका गङ्गातटपर पहुँचकर अश्वत्थामाको ललकारना और अश्वत्थामाके द्वारा ब्रह्मास्त्रका प्रयोग ··· ···	४३६२
१४–अश्वत्थामाके अस्त्रका निवारण करनेके लिये अर्जुनके द्वारा ब्रह्मास्त्रका प्रयोग एवं वेदव्यासजी और देवर्षि नारदका प्रकट होना ···	४३६३
१५–वेदव्यासजीकी आज्ञासे अर्जुनके द्वारा अपने अस्त्रका उपसंहार तथा अश्वत्थामाका अपनी मणि देकर पाण्डवोंके गर्भोंपर दिव्यास्त्र छोड़ना	४३६५
१६–श्रीकृष्णसे शाप पाकर अश्वत्थामाका वनको प्रस्थान तथा पाण्डवोंका मणि देकर द्रौपदीको शान्त करना ··· ···	४३६७
१७–अपने समस्त पुत्रों और सैनिकोंके मारे जानेके विषयमें युधिष्ठिरका श्रीकृष्णसे पूछना और उत्तरमें श्रीकृष्णके द्वारा महादेवजीकी महिमाका प्रतिपादन ··· ···	४३६९
१८–महादेवजीके कोपसे देवता, यज्ञ और जगत्‌की दुरवस्था तथा उनके प्रसादसे सबका स्वस्थ होना	४३७१

चित्र-सूची

(तिरंगा)

१–भीमसेन अश्वत्थामासे प्राप्त हुई मणि द्रौपदीको दे रहे हैं ··· ४३२३

(सादा)

२–अश्वत्थामा एवं अर्जुनके छोड़े हुए ब्रह्मास्त्रोंको शान्त करनेके लिये नारदजी और व्यासजीका आगमन ··· ४३६४

॥ श्रीहरिः ॥

स्त्रीपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(जलप्रदानिकपर्व)	
१	धृतराष्ट्रका विलाप और संजयका उनको सान्त्वना देना	४३७३
२	विदुरजीका राजा धृतराष्ट्रको समझाकर उनको शोकका त्याग करनेके लिये कहना	४३७६
३	विदुरजीका शरीरकी अनित्यता बताते हुए धृतराष्ट्रको शोक त्यागनेके लिये कहना	४३७८
४	दुःखमय संसारके गहन स्वरूपका वर्णन और उससे छूटनेका उपाय	४३७९
५	गहन वनके दृष्टान्तसे संसारके भयंकर स्वरूपका वर्णन	४३८१
६	संसाररूपी वनके रूपकका स्पष्टीकरण	४३८२
७	संसारचक्रका वर्णन और रथके रूपकसे संयम और ज्ञान आदिको मुक्तिका उपाय बताना	४३८३
८	व्यासजीका संहारको अवश्यम्भावी बताकर धृतराष्ट्रको समझाना	४३८५
९	धृतराष्ट्रका शोकातुर हो जाना और विदुरजीका उन्हें पुनः शोक-निवारणके लिये उपदेश	४३८८
१०	स्त्रियों और प्रजाके लोगोंके सहित राजा धृतराष्ट्रका रणभूमिमें जानेके लिये नगरसे बाहर निकलना	४३८९
११	राजा धृतराष्ट्रसे कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्माकी भेंट और कृपाचार्यका कौरव-पाण्डवोंकी सेनाके विनाशकी सूचना देना	४३९१
१२	पाण्डवोंका धृतराष्ट्रसे मिलना, धृतराष्ट्रके द्वारा भीमकी लोहमयी प्रतिमाका भङ्ग होना और शोक करनेपर श्रीकृष्णका उन्हें समझाना	४३९२
१३	श्रीकृष्णका धृतराष्ट्रको फटकारकर उनका क्रोध शान्त करना और धृतराष्ट्रका पाण्डवोंको हृदयसे लगाना	४३९४
१४	पाण्डवोंको शाप देनेके लिये उद्यत हुई गान्धारीको व्यासजीका समझाना	४३९५
१५	भीमसेनका गान्धारीको अपनी सफाई देते हुए उनसे क्षमा माँगना, युधिष्ठिरका अपना अपराध स्वीकार करना, गान्धारीके दृष्टिपातसे युधिष्ठिरके पैरोंके नखोंका काला पड़ जाना, अर्जुनका भयभीत होकर श्रीकृष्णके पीछे छिप जाना, पाण्डवोंका अपनी मातासे मिलना, द्रौपदीका विलाप, कुन्तीका आश्वासन तथा गान्धारीका उन दोनोंको धीरज बँधाना	४३९६
	(स्त्रीविलापपर्व)	
१६	वेदव्यासजीके वरदानसे दिव्य दृष्टिसम्पन्न हुई गान्धारीका युद्धस्थलमें मारे गये योद्धाओं तथा रोती हुई बहुओंको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप	४३९९
१७	दुर्योधन तथा उसके पास रोती हुई पुत्रवधूको देखकर गान्धारीका श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप	४४०२
१८	अपने अन्य पुत्रों तथा दुःशासनको देखकर गान्धारीका श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप	४४०४
१९	विकर्ण, दुर्मुख, चित्रसेन, विविंशति तथा दुःसहको देखकर गान्धारीका श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप	४४०६
२०	गान्धारीद्वारा श्रीकृष्णके प्रति उत्तरा और विराट-कुलकी स्त्रियोंके शोक एवं विलापका वर्णन	४४०७
२१	गान्धारीके द्वारा कर्णको देखकर उसके शौर्य तथा उसकी स्त्रीके विलापका श्रीकृष्णके सम्मुख वर्णन	४४०९
२२	अपनी-अपनी स्त्रियोंसे घिरे हुए अवन्ती-नरेश और जयद्रथको देखकर तथा दुःशलापर दृष्टिपात करके गान्धारीका श्रीकृष्णके सम्मुख विलाप	४४१०
२३	शल्य, भगदत्त, भीष्म और द्रोणको देखकर श्रीकृष्णके सम्मुख गान्धारीका विलाप	४४१२
२४	भूरिश्रवाके पास उसकी पत्नियोंका विलाप, उन सबको तथा शकुनिको देखकर गान्धारीका श्रीकृष्णके सम्मुख शोकोद्गार	४४१४
२५	अन्यान्य वीरोंको मरा हुआ देखकर गान्धारीका शोकातुर होकर विलाप करना और क्रोधपूर्वक श्रीकृष्णको यदुवंशविनाशविषयक शाप देना	४४१६
	(श्राद्धपर्व)	
२६	व्यास अनुस्मृति विद्या और दिव्य दृष्टिके प्रभावसे युधिष्ठिरका महाभारत-युद्धमें मारे गये लोगोंकी संख्या और गतिका वर्णन तथा युधिष्ठिरकी आज्ञासे सबका दाह-संस्कार	४४२०

२७–सभी स्त्री-पुरुषोंका अपने मरे हुए सम्बन्धियोंको जलाञ्जलि देना, कुन्तीका अपने गर्भसे कर्णके जन्म होनेका रहस्य प्रकट करना तथा युधिष्ठिरका कर्णके लिये शोक प्रकट करते हुए उनका प्रेतकृत्य सम्पन्न करना और स्त्रियोंके मनमें रहस्यकी बात न छिपनेका शाप देना ··· ४४२२

चित्र-सूची

(सादा)

१–व्यासजी गान्धारीको समझा रहे हैं ··· ४३९५
२–युद्धमें काम आये हुए वीरोंको उनके सम्बन्धियोंद्वारा जलदान ··· ४४२२